यह चैम्पियन एथलीट स्त्री है या पुरुष?

हाल ही में केस्टर सेमेन्या ने बर्लिन में आयोजित विश्व चैम्पियनशिप में 800 मीटर का स्वर्ण पदक हासिल किया। उन्होंने अपनी निकटतम प्रतिद्वन्द्वी को पूरे 2.45 सेकंड से पछाड़ा। मगर अब यह सवाल उठ रहा है कि हट्टी-कट्टी सेमेन्या स्त्री है या पुरुष। अंतर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स महासंघ ने सेमेन्या को कई सारे जेंडर परीक्षण करवाने का आदेश दिया है। इन परीक्षणों में मनोवैज्ञानिक, स्त्री शरीर क्रिया सम्बंधी और हारमोन सम्बंधी परीक्षण शामिल हैं। इन परीक्षणों के परिणाम कुछ सप्ताह बाद ही मिल पाएंगे और तब तक के लिए सेमेन्या तो तनाव में रहेगी।

अंतर्राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में नियम यह है कि यदि कोई पुरुष स्त्री के भेष में भाग लेता है तो उसे अयोग्य घोषित कर दिया जाता है। मगर सेमेन्या को बचपन से ही लड़की की तरह पाला गया है और वह स्वयं को लड़की ही मानती है।

जीव विज्ञान की दृष्टि से देखें तो जिस व्यक्ति की कोशिकाओं में दो एक्स गुणसूत्र होते हैं वह स्त्री है और यदि एक एक्स और एक वाय गुणसूत्र है तो वह पुरुष है। संभावना तो यह है कि सेमेन्या दो एक्स गुणसूत्रों के साथ स्त्री ही है। मगर कुछ परिस्थितियों में मामला इतना सीधा नहीं होता।

जैसे कई व्यक्तियों में वाय गुणसूत्र तो होता है मगर उनका शरीर वाय गुणसूत्र के कारण बनने वाले नर हारमोन के प्रति संवेदी नहीं होता। ऐसा होने पर उस व्यक्ति में बाहरी मादा जननांग बन जाते हैं और अंदरूनी वृषण यानी नर जननांग भी बन जाते हैं। 1996 के ओलंपिक में जेंडर परीक्षण अनिवार्य था और 3387 महिला एथलीट्स में से 8 में वाय गुणसूत्र पाया गया था। मगर इन सभी को महिला के रूप में भागीदारी की अनुमति दी गई थी। इसके बाद से ओलंपिक संघ ने जेंडर परीक्षण करना बंद कर दिया था।

दरअसल, नर हारमोन एंड्रोजेन के प्रति असंवेदी होने से एथलीट का नुकसान ही होता है क्योंकि उसका शरीर टेस्टोस्टेरोन के प्रति पूरी तरह असंवेदी होता है जबकि एक सामान्य स्त्री का शरीर इसके प्रति संवेदी होता है। कई जीव वैज्ञानिक मानते हैं कि सिर्फ वाय गुणसूत्र की उपस्थिति के चलते किसी महिला को प्रतियोगिता के लिए अयोग्य ठहराना उचित नहीं है।

इस संदर्भ में सेमेन्या की जांच इस बात के लिए भी की जाएगी कि कहीं उसके शरीर में पुरुष हारमोन की अधिक मात्रा तो नहीं बनती। ऐसे कुछ मामलों में महिला मर्दाना नज़र आने लगती है। ऐसा कई कारणों से हो सकता है - जैसे कतिपय ट्यूमर्स की उपस्थिति में भी स्त्री शरीर में अतिरिक्त टेस्टोस्टेरोन बनने लगता है। इस स्थिति में सम्बंधित स्त्री को लाभ तो मिलता है मगर उसे अयोग्य नहीं ठहराया जाता। इसी प्रकार से ऑपरेशन के उपरांत स्त्री बने व्यक्ति को भी महिला वर्ग में भाग लेने की अनुमति होती है, बशर्ते कि ऑपरेशन के बाद उसने कम से कम दो वर्षों तक हारमोन उपचार ले लिया हो ताकि ऑपरेशन पूर्व उपस्थित हारमोन के असर खत्म हो जाएं।

उपरोक्त सारी पेचीदगियों के मद्देनज़र 1992 में अंतर्राष्ट्रीय एथलेटिक महासंघ ने अनिवार्य जेंडर परीक्षण बंद कर दिया था मगर अब भी संदिग्ध मामलों में परीक्षण का अधिकार संघ के पास है। ***(स्रोत फीचर्स)***